

# कलराज मिश्र

निमित्त मात्र हूँ मैं...

आईएसबीएन : 978-93-5407-878-1

प्रथम संस्करण : 2021

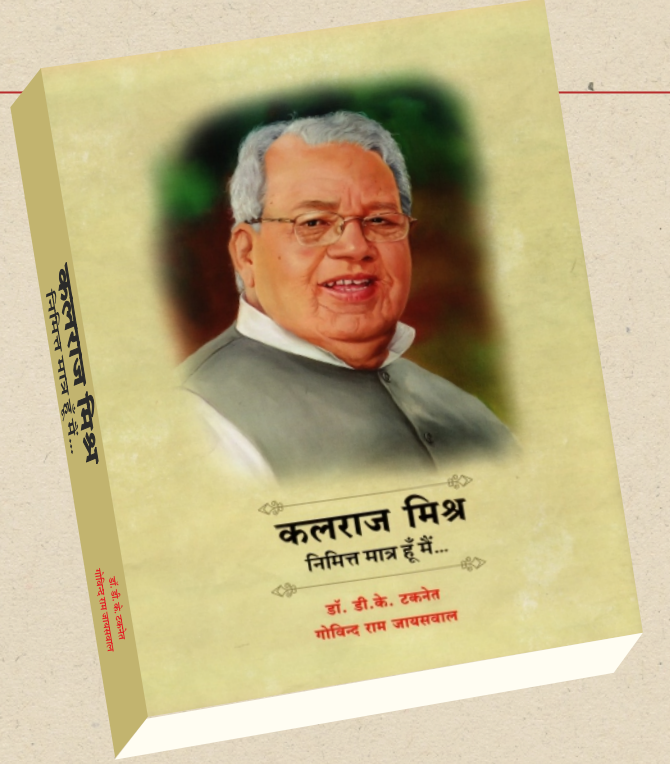
पृष्ठ संख्या : सत्रह+141, रंगीन चित्र पृष्ठ : 218, श्वेत-श्याम चित्र पृष्ठ : 47

पिछले चार दशकों में मुझे विविध विषयों पर पुस्तकों के लेखन के संबंध में देश के अग्रणी राजनेताओं, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों और उद्योगपतियों से भेंट कर उनसे संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ। जिनमें जे. आर. डी. टाटा, घनश्यामदास बिड़ला, धीरूभाई अंबानी, रामकृष्ण बजाज जैसे कर्मयोगी रहे तो ज्ञानयोगी के रूप में डॉ शंकरदयाल शर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ अब्दुल कलाम, डॉ आर. ए. मशेलकर, डॉ एल. के. झा, डॉ राजा जे चलैय्या, नानी ए. पालखीवाला ने मेरे अंतर्मन को प्रभावित किया। कांची कामकोटी पीठम् के आदि शंकराचार्य ने आध्यात्मिकता की नई दिशा दिखाई। इन सभी महानुभावों का प्रतिबिंब देखने को मिलता है—माननीय कलराज मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में। मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण, कार्य के प्रति निष्ठा और आत्मीय व्यवहार जैसे सद्गुणों को आत्मसात् करके ही वह एक कर्मयोगी व ज्ञानयोगी के रूप में उभरे हैं, जिनका पांच दशक का राजनैतिक जीवन इसका साक्षी है। कलराज मिश्र ने सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा को पुष्पित तथा पल्लवित कर समाज के सम्मुख, एक आदर्श रखा है। उनके हृदय में समाज के हर वर्ग के लिए संवेदनाएं हैं, जिसके कारण वे आज भी आमजन के चहेते बने हुए हैं।

कार्यकर्ताओं के लिए पूर्णतः समर्पित रहते हुए उन्होंने समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों को प्रखरता से सार्वजनिक मंचों से उठाया। उनका स्पष्ट मत है कि 'राजनीति सत्ता-सुख का नहीं अपितु जन-कल्याण का माध्यम है।'

उन्होंने जीवन-मूल्यों व नैतिक सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। मानवतावादी विचारों से ओतप्रोत उनके जीवन का ध्येय, सदैव देश व समाज का हित करना रहा है। कलराज मिश्र ने राज्यपाल, केन्द्रीय मंत्री, लोकसभा, राज्यसभा, विधान परिषद व विधानसभा के सदस्य के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। जीवन के विविध क्षेत्रों में, गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ जनकल्याण की प्रबल आकांक्षा से ओतप्रोत कलराज मिश्र ने देश के विकास एवं खुशहाली को एक नई ऊर्जा व गति प्रदान की। ऊर्जावान व्यक्तित्व के धनी कलराज मिश्र ने अपने राजनैतिक व सामाजिक जीवन में सदैव राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना है जिसके कारण वे अत्यंत लोकप्रिय हैं। साधारण कार्यकर्ता से कर्मयोगी बनने की उनकी यात्रा अत्यंत संघर्षपूर्ण एवं प्रेरणादायक रही है।

आज उनके सत्कार्यों की सुगंध चारों ओर महक रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बड़ा नेता बताते हुए उनके कृतित्व की भरपूर सराहना की है। उन्होंने कहा, 'बड़ा नेता क्या होता है और कैसा होता है, यह कलराजजी से सीखा। जब वे युवा मोर्चा का कार्य देखते समय, गुजरात के प्रवास पर आए। उस समय, मैं बहुत छोटा था और प्रायः उनके पास घण्टों समय बिताता था। तब मैंने इनका बड़प्पन देखा। ऐसे लोगों के साथ कार्य करते और उन लोगों को देखते हुए मैं राजनीति में आया। इन लोगों ने ही मुझे बड़ा बनाया।'





## ■ उल्लेखनीय समीक्षाएं व प्रतिक्रियाएं

यह पुस्तक श्री मिश्र के बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कार्यों की झलक के साथ एक साधारण कार्यकर्ता से लेकर राजभवन तक की उनकी यात्रा का सुरुचिपूर्ण संकलन है।...उनका व्यक्तित्व ज्ञान, कर्मठता और मर्यादा का सुन्दर समन्वय है। उन्होंने सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा का अनुसरण कर समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत किया है। उनकी संवेदनशीलता तथा उनके सहज व्यवहार ने उन्हें अत्यंत लोकप्रिय एवं आदरणीय बनाया है।

राम नाथ कोविन्द, राष्ट्रपति, भारत गणतंत्र।

शालीनता के साथ सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले कलराज मिश्र एक कर्मठ नेता हैं। ये राजनीति के मर्मज्ञ हैं।...बड़ा नेता क्या होता है और कैसा होता है, यह कलराजजी से सीखा। जब वे युवा मोर्चा का काम देखते समय गुजरात के प्रवास पर आए। उस समय मैं बहुत छोटा था और अक्सर उनके पास घंटों रहता था तब मैंने इनका बड़प्पन देखा। ऐसे लोगों को साथ काम करते और उन लोगों को देखते हुए मैं राजनीति में आया। इन लोगों ने मुझे बड़ा बनाया।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

पुस्तक का मैंने अद्योपांत अध्ययन किया। उनके छः दशक से भी अधिक समय के राजनैतिक तथा सार्वजनिक जीवन को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध करना अत्यंत ही कठिन कार्य है। लेखकगण ने उनके व्यक्तित्व के सभी रंगों को इस पुस्तक में भलीभांति संजोया है। इस पुस्तक ने अनायास ही मेरे जीवन के नवपरिणीता से लेकर राजभवन, राजस्थान पहुंचने तक के समय को कुछ ही पलों मेरे मानस पटल पर प्रकट कर दिया है।...सब कुछ मेरे सम्मुख जीवंत रूप में प्रकट हो गया है।

सत्यवती मिश्र, कलराज जी की धर्मपत्नी।

यह जीवनी एक अनमोल दस्तावेज है। कृति शोध पूर्ण होने के साथ-साथ भी अत्यन्त रोचक है। यह विद्वानों व लेखकों को बताती है कि प्रामाणिक तथा शोधपरक कृतियां भी आम पाठकों के लिए आकर्षक व रुचिप्रद हो सकती हैं। लेखकगण ने गहन अध्ययन के आधार पर श्री कलराज मिश्र की देश को दी गई बहुमूल्य सेवाओं पर बड़ी ही रोचक शैली में प्रकाश डाला है। पुस्तक पर हिन्दी साहित्य जगत गर्व कर सकता है, यह सराहनीय व अनुकरणीय है।

रमेश पोखरियाल, केंद्रीय शिक्षा मंत्री, भारत गणतंत्र।

राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र पर प्रकाशित शोधात्मक एवं सचित्र जीवनी। यह एक शानदार कृति है।

डॉ मनमोहन सिंह, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

आईआईएमई, जयपुर द्वारा शोध परियोजनाओं के तहत कई दुर्लभ, संग्रहणीय, शोधपूर्ण तथा पुरस्कृत, सचित्र पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त है। अपनी इसी परंपरा को जारी रखते हुए संस्था ने कलराज मिश्र जी पर बहुत ही आकर्षक पुस्तक तैयार की है। जिसके रंगीन, सजीव चित्र पाठक को बरबस ही अपनी ओर खींचते हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री कलराज मिश्र, मृदुभाषी और सहिष्णुता के पर्याय हैं। प्रकाशन हमारी पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच बौद्धिक एवं सांस्कृतिक वैचारिक आदान-प्रदान में एक सेतु का कार्य करेगा।

डॉ राजीव कुमार, उपाध्यक्ष, नीति आयोग, नई दिल्ली।

आपने कठोर परिश्रम द्वारा माननीय कलराज मिश्र जी की जीवनी को जीवंत रूप प्रदान कर दिया। उनके लिए इससे उत्तम उपहार नहीं हो सकता था। इस पुस्तक के बारे में विशेष रूप से जो चीज बरबस हृदय को आकर्षित करती है वह है इसकी शानदार तस्वीरें और चित्र-सज्जा, जो राजस्थान राज्य के लिए भी एक



उपहार है। मैं आपकी और आपके सह-लेखक की भी उल्लेखनीय रूप से उत्कृष्ट उत्पादन गुणवत्ता वाली इस कृति की रचना के लिए सराहना करना चाहता हूँ।

बिबेक देबरॉय, अध्यक्ष, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद व सदस्य नीति आयोग, नई दिल्ली।

यह पुस्तक राजनीति और समाजसेवा से जुड़े जाने-माने व्यक्ति के अनुभवों और कार्यों से पाठकों को परिचित कराती है। आपने जिन तथ्यों को प्रस्तुत किया है वह श्री कलराज मिश्रजी के आदर्श, उनकी विचारधारा और प्रतिबद्धताओं से पाठकों का साक्षात्कार करवाते हैं। यह एक संग्रहणीय, शोधपरक ग्रन्थ है जो कलराजजी की समाज व देश के प्रति समर्पण भाव को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है। ऐसे ग्रन्थ नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक बने रहेंगे।

प्रो धीरेन्द्र पाल सिंह, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

श्री कलराज मिश्रजी पर लिखी गई यह किताब बहुत श्रेष्ठ और आकर्षक है। मैंने पहला पन्ना पलटा और पलटता चला गया। उनके कार्य, सफलताएं और राजनीतिक जीवन सभी कुछ गागर में सागर की तरह समेटा गया है। फोटो की गुणवत्ता तथा संयोजन भी बहुत अच्छा और आकर्षक लगा। नवनीत गुर्जर, राष्ट्रीय संपादक, दैनिक भास्कर।

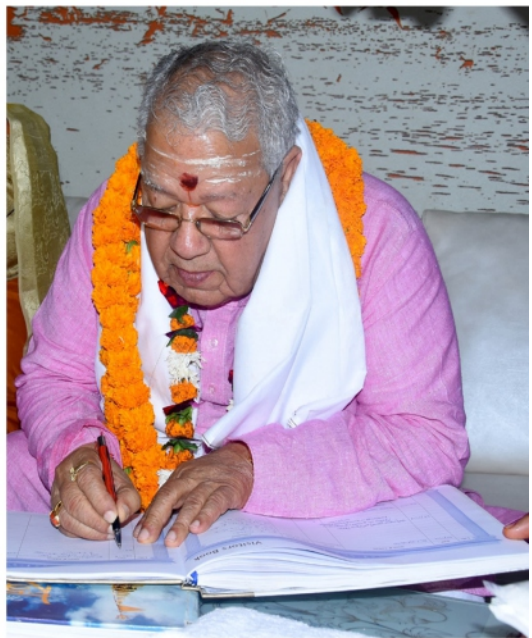
कलराज मिश्र जी के पूर्वजों की मिट्टी, जिस क्षेत्र से संबंधित हैं, उनके जीवन के विविध आयामों को लेखकगण ने 'गीता' में 'कर्म' के सिद्धांत पर चलते हुए अपना मार्ग प्रशस्त किया तथा उनकी व्यावहारिक-आर्थिक सोच भी अत्यंत प्रेरक लगी। पुस्तक की प्रस्तुतीकरण शैली, प्रकाशन की सामग्री और समग्र गुणवत्ता वास्तव में अत्यंत उच्च स्तर की है।

प्रो वी. के. मल्होत्रा, सदस्य सचिव, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।

अनवरत जागरूक सक्रियता का नाम है-श्री कलराज मिश्र। अध्ययन काल से लेकर अब तक वे सच्चे एवं सचेत समाजसेवी की भूमिका में हैं।... विश्वविद्यालयों को अकादमिक रूप से समृद्ध और अनुशासित बनाने की दिशा में आपकी सक्रियता को अनुभव किया जा रहा है। भारत का विश्वगुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित होते देखने की आकांक्षा आपके व्यक्तित्व को विरल बनाती है।...बहुत श्रम के साथ इस पुस्तक का लेखन किया गया है। प्रा नन्द किशोर पाण्डेय, निदेशक, भारतीय हिंदी परिषद, इलाहाबाद।







कलराजजी के पिता पं. रामाज्ञा मिश्र व माता श्रीमती प्रभा देवी।

